अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

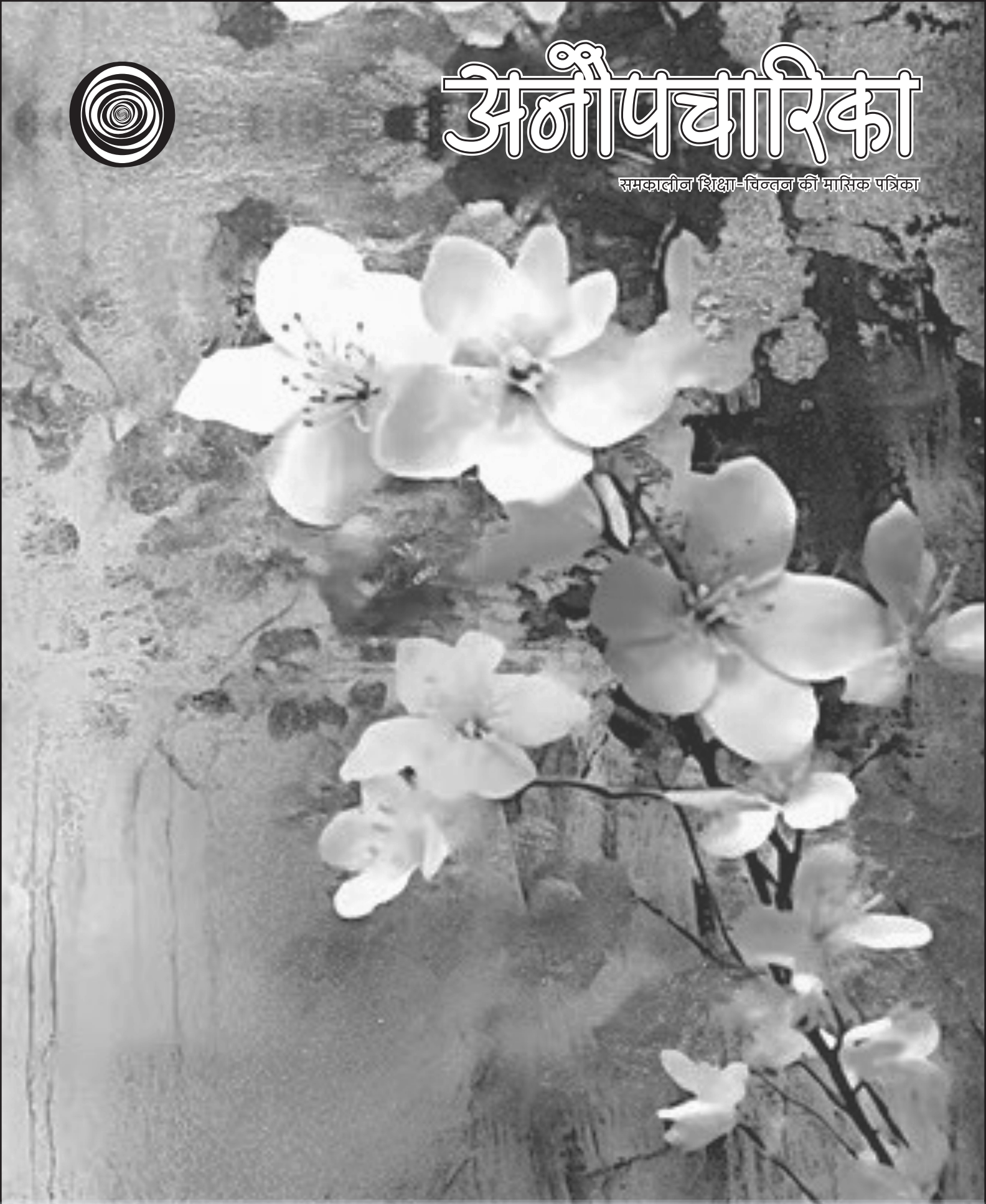

वर्ष : 52 अंक : 1 पौष–माघ वि.सं. 2081 जनवरी, 2025 पृष्ठ–28 **RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x**

आज तुमसे दूर होकर...

मुकेश को गुजरे आधी सदी होने को आ रही है मगर उनके गाए गानों का जादू आज भी श्रोताओं को अपनी गिरफ्त में बांधे हुए हैं। यह जुदा बात है कि इस गायक के प्रशंसक उसे उस तरह सिर पर नहीं चढ़ाते जिस प्रकार किशोर कुमार और मोहम्मद रफी के चाहने वाले उनका तूफान मचाए रखते हैं। मन्ना डे अपनी शास्त्रीयता और तलत महमूद अपने ग़ज़ल अंदाज़ के कारण विमर्श में बने रहते हैं। लेकिन मुकेश पर बातें कम होती है।

इसी गायक पर राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के मासिक समागम 'सुर संगत' में विमर्श हुआ। यह वर्ष इस गायक का जन्म शताब्दी वर्ष भी है। कुछ महीनों पहले 24 जुलाई को भारत सरकार ने उनकी सौवीं जयंती पर उनकी याद में उन पर एक डाक टिकट जारी किया था। इससे पहले भी डाक विभाग ने इस गायक पर डाक टिकट निकाले थे।

मुकेश हिंदुस्तानी सिने पार्श्व गायन जगत के किसी चमकदार सितारे से कम नहीं थे। सच तो यह है कि कुल गाये गानों में हिट गानों का प्रतिशत निकालें तो शायद मुकेश अपने समकालीनों पर भारी ही पड़ेंगे।

सिनेमा के पर्देपर अपनी ही आवाज़ लिए वे फिल्म 'निर्दोष' (1941) में पहली बार नजर आए। मगर 1950 के दशक के अंत तक वे अपनी खुद शैली में आ गए और श्रोताओं का दिल जीतते चले गए।

संगत के विमर्श में यह भी रेखांकित हुआ कि उन्हें शुरुआती उरूज़ पर ले जाने वाली फिल्में 'मेला' (1948) और 'अंदाज़' (1949) नौशाद के संगीत वाली थी जिनमें पांच-पांच गाने मुकेश के थे और केवल एक एक रफी का था। बाद में संयोग ऐसा बना कि मुकेश और नौशाद का साथ करीब बीस बरस बाद 'साथी' (1968) में हुआ।

मुकेश राजकपूर की आवाज़ बन कर छा गए जिसमें शंकर जयकिशन की भूमिका कमतर करके नहीं आंकी जा सकती।

सचिनदेब बर्मन ने मुकेश से बहुत कम गवाया मगर जब भी गवाया कमाल हुआ। ❑

समिति में पाठक पर्व

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के संयोजन में नियमित होने वाला 'पाठक पर्व' 21 दिसंबर को आयोजित किया गया। साहित्यिक विमर्श में इस बार नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पुस्तक 'अधूरी आत्मकथा' (अनफिनिश्ड बायोग्राफी) और निराला की लंबी कविता की पुस्तक 'तुलसीदास' पर चर्चा हुई।

बोस की किताब पर राव शिवपाल सिंह ने बात की तो देवांशु झा ने सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की रचना पर सारगर्भित टिप्पणी की।

इस अवसर पर युवा कवि मनमीत की कविताओं की पुस्तक ' माइनस चार से पचास प्लस तक' का लोकार्पण हुआ और कवि ने अपने लेखकीय अनुभवों का साझा किया। ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा के प्रयत्नों से कार्यक्रम से अनेक लोग ऑनलाइन भी जुड़े जिनमें एक संभागी हांगकांग से भी जुड़ी। इस अवसर पर कल्याण सिंह शेखावत, गोपाल शर्मा प्रभाकर, अमित कल्ला, महेश चन्द्र शर्मा सहित पुस्तक प्रेमी उपस्थित रहे।❑

राह दिखाओ; ज्योतिपुंज तुम!

ज्योतिपुंज! तुम राह दिखाओ
गहराते इस अंधकार में
राह दिखाओ आगे- आगे
रात अंधेरी दूर बसेरा
राह दिखाओ आगे।

थामो मेरे पग
चाहता नहीं देखना
दूर दृश्य मैं
एक कदम
ही मुझे बहुत है।

मैं ऐसा तो नहीं कभी था
राह दिखाने की कभी मनुहार नहीं की
मैंने अपनी राह चुनी स्वयं ही
और
पथ देखा मैंने
किन्तु आज
तुम राह दिखाओ आगे-आगे।

छद्म भरा दिन सदा मुझे भाया करता था
और अनगिनत आशंकाओं बीच घिरे रहने
पर भी
मेरी इच्छा पर अभिमान लदा था
भूले बिसरे वर्ष याद मत करो दयामय!

अब तक तेरी करुणा का वरदान मिला है
अब भी वह पल-पल मेरा पथ दीप्त करेगी
जब तक निशा बीत न जाए
दल दल बीहड़ प्रचण्ड धार में और
शृंग के, दुर्गम पथ में तेरी करुणा का
मुझको स्पर्श मिलेगा जब तक

आभा लिए आनन
मुस्कान नव प्रभात में सदा जिन्हें
मैंने चाहा है किन्तु कर दिया विस्मृत जिनको
एक घड़ी भर

– **जॉन हेनरी न्यूमैन (1801–1890)**

अनुवाद और प्रस्तुति डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम'
(महात्मा गाँधी की प्रार्थना–सभाओं में प्रायः गाया जाने वाला गीत)

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 1 पौष-माघ वि.सं. 2081 जनवरी, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. राह दिखाओ; ज्योतिपुंज तुम!

अध्यक्ष की कलम से

5. आइए, सत्य, अहिंसा और प्रेम का संकल्प लें !

लेख

7. पूंजी का बदला स्वरूप : राष्ट्रीय सरकारों का घटता नियंत्रण
– सुधांशु मिश्र

9. मर्ज़ की नहीं मरीज़ की देखभाल करना सीखें
– डॉ.पी.के.सेठी

13. भारत में खेतीबाड़ी की बदलती तस्वीर!
– सीमों वीबुश

शायरी

14. तू नया है तो दिखा सुब्ह नई शाम नई

पुस्तक परिचय

16. स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व त्रयी में सामंजस्य की प्रस्तावना

18. भारत में फ्री स्कीमें और विकास : एक विश्लेषण
– सुरेन्द्र बैरवा

लेख

20. जैसलमेर में बारिश होना अच्छी खबर क्यों नहीं है!
– अमन सिंह

लेख

22. मानव का बौद्धिक विकास
– डॉ. अवध प्रसाद

पर्यावरण

23. गुलाब को कोई भी नाम दो उसकी खुशबू वही रहेगी
– प्रो. पी.एन. कल्ला

स्मृति शेष

25. प्रेमचंद जैसे सीधे सरल थे श्याम बेनेगल
– अशोक मिश्र

स्मृति शेष

27. अलविदा उस्ताद

नव वर्ष की शुभकामनाएं

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

संरक्षक :
श्रीमती आशा बोथरा
संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

आशा बोथरा

अध्यक्ष की कलम से

आइए, सत्य, अहिंसा और प्रेम का संकल्प लें !

नए साल की आमद को लोग एक जश्न के तौर पर मनाते हैं। ये एक साल को अलविदा कह कर दूसरे साल के स्वागत का मौक़ा होता है। ये ज़िंदगी की क्षणभंगुरता को भूल कर उत्सव मनाने का समय होता है तो कुछ कर गुज़रने का संकल्प लेने का भी। संकल्प के ऐसे ही मौके पर मैं अनौपचारिका के समस्त मैत्री समुदाय का अभिवादन करती हूं।

देश काल ऐसा बन गया है जब ज्वलंत और समसामयिक प्रश्नों पर केंद्रित विचारोत्तेजक संवाद की आवश्यकता पहले अधिक हो गई है। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में हम ऐसे संवाद आयोजित करते रहते हैं। मुझे आशा है कि इन संवादों से देशकाल पर छायी जड़ता को सही स्थितियों और संदर्भों में समझने में मदद मिलेगी और हमारा कर्मक्षेत्र उन्नत होगा।

हमारी कोशिश है कि देश की युवा पीढ़ी न केवल नए सवालों को अपनी दृष्टि से समझे, बल्कि उनके हल भी खुद ही ढूंढे।

दुर्भाग्य से हम अभिव्यक्ति के उस दौर में हैं जहां कुसंस्कारों और कुंठाओं की झलक साफ नज़र आती है। देश की अर्थव्यवस्था के उछाल के इस दौर में सरकारें खुश हैं मगर आम आदमी खुशी नहीं मायूसी की झलक है। यह मायूसी गरीबी और हाथ को काम न होने की है। गांधी जी का विचार था कि जब तक 16 वर्ष के ऊपर प्रत्येक तंदरुस्त स्त्री-पुरुष के लिए भारत के प्रत्येक गांव के खेत, झोंपड़ी या कारखाने में काम और मजदूरी दिलाने का बेहतर तरीका न निकाल लिया जाय तब तक लाखों ग्रामीणों की दृष्टि से खादी ग्रामोद्योग ही एकमात्र सच्ची आर्थिक योजना है। मगर आजादी के इतने वर्षों बाद भी इसका हम कोई बेहतर तरीका नहीं खोज पाये हैं और खादी ग्रामोद्योग को तो बिसरा चुके हैं। खादी जीवन मूल्य की तरह भारतीय जनमानस में रहा है। मगर अब खादी नाम पर ही राज्य का ठप्प आवश्यक हो गया है।

यह वह समय है जब हम अपने आप से यह सवाल करें कि क्या हम जहां कहीं भी हैं जी कुछ भी कर रहे हैं क्या हम अपना काम सच्चाई से साथ कर रहे हैं? क्या यह पूछना समीचीन नहीं है कि चाहे वह प्रशासनिक अधिकारी हो या अन्य सरकारी कर्मचारी, मैनेजर हो, इंजिनीयर हो, डॉक्टर हो, वकील हो, मजदूर हो या कोई और हो

ईमानदारी से अपना काम अंजाम देने की बजाय अपनी विशेष सुविधा की संरक्षा, और उन्नति के लिए कहीं अधिक सरोकार ही क्यों रखता है?

महात्मा गांधी का अहिंसा का संदेश आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था, आज का विकल्प हिंसा और अहिंसा के बीच नहीं है; यह हिंसा और अस्तित्वहीनता के बीच है। गांधी जी ने हमें सिखाया कि समाज की उन्नति धन और सत्ता पर नहीं, बल्कि नैतिक उत्कृष्टता और सत्य में जीने पर निर्भर करती है। उन्होंने यह भी सिखाया कि स्वराज का अर्थ आत्म संयम और नैतिक जागरूकता होती है सत्ता प्राप्त करना नहीं। गांधीजी ने सिखाया कि समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक संघर्ष अहिंसा और प्रेम से सुलझाए जा सकते हैं। गांधी ने न केवल राजनीति को पवित्र बनाने के लिए उसे नया अर्थ दिया, बल्कि उसे आत्म-निरीक्षण में बदल दिया।

जनवरी का माह महात्मा गांधी की शहादत का महिना भी है। नए वर्ष का जश्न मनाते हए हम बापू की अहिंसक संघर्ष की विरासत से अपना मार्ग रोशन कर सकते हैं महात्मा गांधी परंपरा का सम्मान करते थे। वह बहुत धार्मिक थे। लेकिन उनका धर्म एक ऐसा धर्म था जो हर धर्म से जुड़ा था, एक ऐसा धर्म जो सर्व-समावेशी था। जिसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं था। गांधी जी ऐसे किसी रास्ते में विश्वास नहीं करते थे जिनमें हिंसा शामिल हो।

यह सच है कि आज की दुनिया पूरी तरह बदली हुई है। औपनिवेशिक अधीनता के मुद्दे अब नहीं हैं। परन्तु शांति, सद्भाव और स्थिरता के लिए नए खतरे उभरे हैं जो 21 वीं सदी के सबसे बड़े और अनिवार्य मुद्दे बन गये हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि संघर्षों को सुलझाने के लिए हमें एक नए प्रतिमान की बहुत आवश्यकता है। यह नए प्रतिमान हमें गांधी की सत्य और अहिंसा में मिल जाएंगे।

आजादी के दिन से दो माह पहले जून 1947 में एक भाषण में बापू ने कहा था: मेरी तो तमन्ना ये है, मेरी तो आशा ये है, ईश्वर से प्रार्थना ये है कि हिंदुस्तान ऐसा बने कि जिससे सारी दुनिया कहे कि अगर आज़ाद बनना है तो हिंदुस्तान के जैसे आज़ाद बनो। ऐसा करने में आप लोग बहुत बड़ा हिस्सा दे सकते हैं। सब के सब अपनी जगह पर अपने धर्म का पालन करें तो हिंदुस्तान जैसा मैं आपको कहता हूं ऐसा बन सकता है उसमें मुझको तनिक भी शंका नहीं है।

यूक्रेन से लेकर सूडान, मध्य पूर्व और उससे भी परे, युद्ध ने विध्वंस, बेबसी, और भय का नरक जैसा माहौल बन गया है। असमानता और जलवायु संकट, शान्ति की बुनियादों को कमज़ोर कर रहे हैं। सबसे खतरनाक बात यह है कि ऑनलाइन मंचों पर फैलाई जाने वाली नफ़रत, अब सड़कों पर भी नज़र आने लगी है।

ऐसे हालात में हम फिर भी आशा करते हैं कि नया वर्ष बदलाव का वर्ष साबित होगा। मगर इसके लिए सभी को अपने अपने स्तर पर योगदान करना होगा। यह कठिन समय जरूर है जब वे ताकतें उफान पर हैं जो भारतीय समाज का ताना-बाना छिन्न-भिन्न करने को आमादा हैं। मगर हम राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में गांधी के बताये मार्ग पर चलने के लिए मन में हिम्मत और शक्ति रखते हैं। ❑

पूंजी का बदला स्वरूप : राष्ट्रीय सरकारों का घटता नियंत्रण

❑

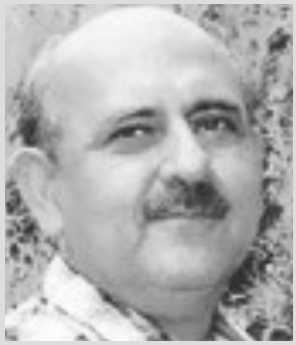

❑

सुधांशु मिश्र

पत्रकार सुधांशु मिश्र निजी कंपनियों के उस बढ़ते प्रभुत्व पर चिंतित दृष्टि डाल रहे हैं जिनके सामने राष्ट्र-राज्य भी अपना नियंत्रण खोते जा रहे हैं। सं.

पिछले पचास से भी काम वर्षों में विश्व व्यवस्था और आर्थिक उपनिवेशवाद के स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन आया है। अपने पुराने और शुरूआती रूप में, पूंजीवाद खुली और अनियंत्रित प्रतिस्पर्धा का पक्षधर था। मगर बाज़ार के नियमों पर राष्ट्रीय सरकारों का नियंत्रण था। यूरोप और अमेरिका में हुई औद्योगिक क्रान्ति का एक सुखद परिणाम यह भी था कि सामन्तवाद और जागीरदारी व्यवस्था ख़त्म हो गई।

पिछले पचास वर्षों में बाज़ार पर राष्ट्रीय सरकारों का नियंत्रण घटा है और बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रभाव और नियंत्रण बढ़ा है। नब्बे के दशक से शुरू हुए वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर के बाद इसमें बहुत तेज़ी आई है।

सरकारों की अपने मतदाताओं के लिए काम करने की क्षमता अब कम होती जा रही है। बड़ी कम्पनियों का नाटकीय रूप से राजनीतिक प्रभाव बढ़ रहा है। फ़ेसबुक और गूगल जैसी उन्नत तकनीक वाली हाई-टेक कम्पनियां इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उथल-पुथल और जीवन यापन के लिए दूसरे देश जाना आदि आज की सबसे बड़ी चुनौतियों में शामिल हैं जिन्हें हल करने में राष्ट्र-राज्यों में पर्याप्त इच्छाशक्ति और संसाधन की असमर्थता दिखाई देती है। वास्तव में ये बड़े व्यवसाय मानव कल्याण की चुनौतियों के समाधान न हो कर, खुद जटिल समस्या का हिस्सा बन गये हैं।

विदेशी हस्तक्षेप के बढ़ते ख़तरे की चिंता के जवाब में, गूगल ने हाल ही में यूरोपीय संसद चुनावों में ऑनलाइन हस्तक्षेप को रोकने के लिए एक योजना शुरू की थी। वैसे इसे नियंत्रित करने का काम यूरोपीय संघ का था। लेकिन इसके लिए उसके पास कोई प्रभावी ढांचा ही नहीं था। इसकी भरपाई के लिये, गूगल कम्पनी ने घोषणा की कि वह पूरे यूरोप के लिये अपनी ख़ुद की 'एक पैन यूरोपीय नीति' बना रही है। इसी तरह, फ़ेसबुक और ट्विटर ने 2018 के नवंबर में संयुक्त राज्य अमरीका में मध्यावधि चुनावों का उपयोग अपने प्लेटफ़ॉर्म से फ़र्ज़ी खबरों और गलत